डाक पंजीयन क्रमांक - म.प्र./भोपाल/4-357/2024-26

मुद्रित पत्र रजि. नं./आर.एन./13063/1967

किसान कल्याण वर्ष-2026
समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश

मध्यप्रदेश सहकारी समाचार

मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ भोपाल का प्रकाशन

Website : www.mpscu.in
E-mail : rajyasanghbpl@yahoo.co.in

हिन्दी/पाक्षिक
प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल, 2026, डिस्पेच दिनांक 1 अप्रैल, 2026

| वर्ष 69 | अंक 21 | भोपाल | 1 अप्रैल, 2026 | पृष्ठ 8 | एक प्रति 7 रु. | वार्षिक शुल्क 150/- | आजीवन शुल्क 1500/- |

कृषक कल्याण वर्ष में कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने और कृषक कल्याण की योजनाओं को धरातल पर उतारने का करें कार्य : मुख्यमंत्री

प्रत्येक विधानसभा में आयोजित होंगे कृषि सम्मेलन

विधानसभावार कृषि सम्मेलन के लिए कृषि विभाग देगा 5 लाख रुपए

लघु कृषकों को उन्नत खेती के लिए किराये पर उपलब्ध कराये जाएंगे कृषि यंत्र

डेढ़ साल में प्रदेश का दूध संकलन 25 प्रतिशत बढ़कर हुआ 12.50 लाख लीटर प्रतिदिन

कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में हुआ कृषि अभिमुखीकरण कार्यक्रम

भोपाल :मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषक कल्याण वर्ष 2026 में विभिन्न विभाग मिलकर कृषि विकास और कृषक कल्याण योजनाओं को धरातल पर उतारने का कार्य करेंगे। किसानों की आय बढ़ाने के लिए सभी उपायों पर क्रियान्वयन तेज किया जाएगा। कृषक कल्याण वर्ष का लाभ किसानों के परिवारों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। मध्यप्रदेश, देश का इकलौता राज्य है, जो 5 रुपए में किसानों को बिजली का कनेक्शन उपलब्ध करवा रहा है। ये किसानों के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में कृषक कल्याण वर्ष में सक्रिय सहभागिता जुटाने के उद्देश्य से आयोजित किए गए कृषि अभिमुखीकरण कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला में उप मुख्यमंत्री द्वय श्री जगदीश देवड़ा और श्री राजेन्द्र शुक्ल सहित किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत, राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला, उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप, संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी, पिछड़ा वर्ग कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल, मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री नारायण सिंह पवार सहित मंत्रीगण, विधायक, जनप्रतिनिधि एवं किसान संगठनों के प्रतिनिधि, एफपीओ के पदाधिकारी एवं प्रबुद्धजन शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कुशाभाऊ ठाकरे सभागार मध्यप्रदेश के पुराने विधानसभा भवन का पवित्र स्थान है। इस स्थान पर कृषक कल्याण योजनाओं पर केन्द्रित कार्यशाला राज्य सरकार के कृषि क्षेत्र को दी जा रही प्राथमिकता का भी प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस कार्यक्रम के लिए आयोजकों को बधाई दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में दूध उत्पादन और पशुपालन की व्यापक संभावनाएं हैं।उन्हें साकार करने के प्रयास सफल हो रहे हैं। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है। पिछले डेढ़ साल में प्रदेश का दूध कलेक्शन 25 प्रतिशत बढ़ा है। अब प्रदेश में प्रतिदिन 12.50 लाख लीटर दूध कलेक्शन किया जा रहा है। दूध का मूल्य भी 5 रुपए प्रति लीटर बढ़ा है। इससे दुग्ध उत्पादकों को सीधे तौर पर लाभ मिलेगा। गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने और क्षेत्र में नरवई प्रबंधन के लिए राज्य सरकार ट्रैक्टर-ट्रॉली और भूसे की मशीन उपलब्ध करवा रही है। राज्य सरकार ने स्कूली बच्चों के लिए नि:शुल्क दूध वितरण के लिए माता यशोदा योजना शुरू करने की पहल की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। टूरिज्म डिपार्टमेंट ने होम स्टे की योजना शुरू की है। होम स्टे संचालकों के लिए 20 लाख रुपये तक की आय जीएसटी से मुक्त रखी गई है। लघु-कुटीर उद्योग के क्षेत्र में शहद उत्पादन से किसान लाभ कमा रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कार्यशाला में लगभग सभी प्रमुख विभाग शामिल हुए हैं। राज्य की आबादी का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा इन 16 विभागों के अंतर्गत आ जाता है। प्रदेश में सिंचाई का रकबा 100 लाख हैक्टेयर करने के लिए निरंतर कार्य हो रहा है। प्रदेश में नए मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र में कृषि यंत्रों की दुकानें खुलेंगी, जिनसे लघु कृषकों को खेती के लिए किराये पर यंत्र उपलब्ध करवाए जाएंगे। विधायक अपने क्षेत्र में 4 से 5 कृषि सम्मेलन करें, इसके लिए कृषि विभाग ने प्रति विधानसभा क्षेत्र 5 लाख रुपए आवंटित करने का निर्णय किया है। इन प्रयासों से कृषि कल्याण के लिए सकारात्मक वातावरण बनेगा। किसान सौर बिजली उत्पादन की सभी योजनाओं का लाभ उठाएं। लघु-कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए भी कार्य करें।

प्रदेश प्रभारी श्री महेंद्र सिंह ने कहा कि हमारा मध्यप्रदेश अब हजार और लाख में नहीं, मिलियन, बिलियन और ट्रिलियन में बात करने के लिए तैयार है। मध्यप्रदेश क्षेत्रफल के हिसाब से कृषि में चौथे स्थान पर है। इसके बावजूद मध्यप्रदेश कई खाद्यान्नों के उत्पादन में देश में, पहले और दूसरे स्थान पर हैं। मध्यप्रदेश चौथे स्थान पर भी रहते हुए देश के खाद्यान्न उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रदेश के किसानों को सस्ती दरों पर बिजली और सिंचाई के लिए पम्प उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। प्रदेश में सिंचाई का रकबा 54 लाख हैक्टेयर है। राज्य सरकार ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के सपने को साकार करते हुए सिंचाई का रकबा आगामी वर्षों में 100 लाख हैक्टेयर करने का लक्ष्य रखा है। प्रदेश में दूध एवं डेयरी क्षेत्र में आगे बढ़ने की व्यापक संभावनाएं हैं। प्रदेश की कृषि विकास दर तेजी के साथ बढ़ी है। इसी प्रकार प्रदेश का बजट वर्ष 2003-24 में 23 हजार था, जो अब 4 लाख 38 हजार करोड़ से अधिक हो गया है। प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय और जीडीपी में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राज्य सरकार ने मध्यप्रदेश को 2 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है। इसमें कृषि कल्याण वर्ष महत्वपूर्ण योगदान देगा। विकसित भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश की बड़ी भूमिका होगी।

अपर मुख्य सचिव जल संसाधन और नर्मदा घाटी विकास डॉ. राजेश राजौरा ने प्रदेश में विभिन्न परियोजनाओं से निरंतर बढ़ रहे सिंचाई प्रतिशत की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश आने वाले कुछ समय में एक लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। डॉ. राजौरा ने अंतर्राज्यीय नदी जोड़ो परियोजनाओं के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी दी और बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के प्रयासों से इन परियोजनाओं की स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त हुआ। मध्यप्रदेश का बड़ा क्षेत्र इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से लाभान्वित होगा। कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक वर्णवाल ने कहा कि मध्यप्रदेश पिछले 10 साल से कृषि क्षेत्र में 2 अंकों में वृद्धि कर रहा है। इस गति को बनाए रखने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देशानुसार कई विभागों को जोड़कर कृषक कल्याण वर्ष मना रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आधुनिक तकनीक से कृषि प्रबंधन हुआ अधिक सटीक और पारदर्शी : डॉ. यादव

''सारा' और 'उन्नति' एग्री-जीआईएस से साइंटिफिक हुआ फसल आंकलन

सैटेलाइट, ड्रोन और एआई से हो रहा फसलों का वैज्ञानिक विश्लेषण

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में कृषि क्षेत्र को आधुनिक तकनीक से जोड़कर फसल प्रबंधन को अधिक सटीक, पारदर्शी और प्रभावी बनाया जा रहा है। राज्य सरकार की 'सारा' और 'उन्नति' एग्री-जीआईएस प्रणाली से उपग्रह चित्रों, ड्रोन सर्वेक्षण और खेतों की वास्तविक तस्वीरों का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) से विश्लेषण किया जा रहा है। इससे फसल निगरानी और उत्पादन आंकलन को वैज्ञानिक आधार मिला है और किसानों को योजनाओं का लाभ अधिक पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से मिल रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'उन्नति' प्लेटफॉर्म और 'सारा' एप्लिकेशन से क्रॉप मैपिंग और फसल गिरदावरी की प्रक्रिया को आधुनिक तकनीक से जोड़ा गया है। डीप लर्निंग तकनीक से 'सारा' ऐप द्वारा प्राप्त लाखों तस्वीरों का विश्लेषण कर खेत स्तर पर बोई गई फसलों के प्रकार का सत्यापन किया जाता है, जिससे फसलों की वास्तविक स्थिति का सटीक आंकलन संभव हो रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्मार्ट क्रॉप मैपिंग और पहचान के लिए उपग्रह चित्रों और रैंडम फॉरेस्ट मॉडल का उपयोग कर भूमि खंड (खसरा) स्तर पर फसलों की पहचान की जा रही है। साथ ही अधिसूचित फसलों के लिए 'पटवारी हल्का' स्तर पर उपज का पूर्वानुमान भी लगाया जा रहा है। इससे कृषि योजना निर्माण, खाद्यान्न खरीद व्यवस्था और फसल बीमा प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में मदद मिल रही है। इस तकनीकी पहल से फसल पहचान और आकलन की सटीकता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। वर्ष-2022 में जहाँ सटीकता 66 प्रतिशत थी, वहीं वर्ष-2025 तक यह बढ़कर लगभग 85 प्रतिशत हो गई है। हाल के रबी और खरीफ सीजन में इस प्रणाली से 5 करोड़ 37 लाख से अधिक खेतों की तस्वीरों का विश्लेषण किया गया है, जिससे रीयल-टाइम फसल पहचान संभव हुई है। इस प्रणाली से 3 करोड़ से अधिक भूमि खंडों में बोई गई फसलों का डिजिटल मैपिंग किया गया है। साथ ही प्रमुख फसलों की पहचान और डिजिटल फसल गिरदावरी का सत्यापन भी किया जा रहा है। वर्ष 2023 से 'पटवारी हल्का' स्तर के लगभग 22 हजार क्षेत्रों में फसल उत्पादन का आंकलन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भू-स्थानिक (जियो-स्पेशियल) तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग आधारित यह प्रणाली किसानों, सर्वेक्षकों और फसल बीमा कंपनियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। इससे जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में फसल नुकसान का समय पर आकलन संभव होगा, जिससे किसानों को मुआवजा सुनिश्चित करने में भी सहायता मिलेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्व विभाग और किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग के समन्वित प्रयासों से विकसित यह पहल मध्यप्रदेश की कृषि व्यवस्था को तकनीक आधारित, पारदर्शी और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों को आय सुरक्षा और बेहतर कृषि प्रबंधन का लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्व विभाग और किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग के समन्वित प्रयासों से विकसित यह पहल मध्यप्रदेश की कृषि व्यवस्था को तकनीक आधारित, पारदर्शी और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों को आय सुरक्षा और बेहतर कृषि प्रबंधन का लाभ मिलेगा।

सरसों की खरीदी के लिये भावांतर भुगतान योजना को मिली केन्द्र से स्वीकृति : मुख्यमंत्री

भोपाल :मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सतत् प्रयासों का परिणाम है कि मध्यप्रदेश के किसानों को केंद्र सरकार से बड़ी राहत और कई महत्वपूर्ण मंजूरियां मिली हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नई दिल्ली में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर राज्य के किसानों और ग्रामीण विकास से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। बैठक में पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल और वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। इस उच्च स्तरीय चर्चा में ग्रामीण सड़कों सहित अनेक विषयों पर मध्यप्रदेश को बड़ी राहत देने वाले निर्णय लिये गये।

सरसों किसानों को मिलेगा भावांतर भुगतान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के आग्रह पर सरसों की खरीद से जुड़े मुद्दों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने भावांतर भुगतान योजना के तहत मध्यप्रदेश के प्रस्ताव को मंजूरी देते हुए संबंधित विभागों को भुगतान प्रक्रिया तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए। इससे राज्य के सरसों उत्पादक किसानों को सीधा लाभ मिलेगा।

तुअर की शत-प्रतिशत खरीद का मार्ग प्रशस्त

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. यादव को तुअर (अरहर) की शत-प्रतिशत सरकारी खरीद का स्वीकृति-पत्र भी सौंपा। इस निर्णय से मध्यप्रदेश के तुअर उत्पादक किसानों की उपज का पूर्ण सरकारी उपार्जन सुनिश्चित होगा, जिससे उन्हें बाजार में भाव गिरने का जोखिम नहीं उठाना पड़ेगा और आय में स्थिरता आयेगी।

दलहन–तिलहन उत्पादन बढ़ाने की दिशा में पहल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश को दलहन और तिलहन उत्पादन का अग्रणी केंद्र बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस पर केंद्र और राज्य की संयुक्त टीम द्वारा मूंग, उड़द, चना, तिल, सरसों और पाम ऑयल जैसी फसलों के लिए दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने पर सहमति बनी।

फसल बीमा में किसानों के हितों की सुरक्षा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में किसानों के हितों की बेहतर सुरक्षा का मुद्दा भी उठाया। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए कि सोयाबीन जैसी फसलों के आंकलन में केवल सैटेलाइट डेटा के बजाय क्रॉप कटिंग और रिमोट सेंसिंग तरीकों का उपयोग किया जाए, जिससे किसानों को वास्तविक नुकसान के आधार पर मुआवजा मिल सके।

कृषि से जुड़े मुद्दों और योजनाओं की हुई समीक्षा

बैठक में मध्यप्रदेश के लिए सरसों और सोयाबीन के भावांतर भुगतान, दलहन मिशन के तहत मूंग-उड़द के अतिरिक्त लक्ष्य, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता कार्यक्रम, मनरेगा मजदूरी और सामग्री भुगतान, प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से जुड़े मुद्दों पर बिंदुवार चर्चा की गई। केन्द्रीय मंत्री श्री चौहान ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि मध्यप्रदेश से जुड़े लंबित प्रकरणों को प्राथमिकता से निपटाया जाए, जिससे राज्य के किसानों, मजदूरों और ग्रामीण गरीबों को शीघ्र राहत मिल सके।

ग्रामीण विकास योजनाओं को मिलेगी गति

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार किसानों के हितों के लिए प्रतिबद्ध है और मध्यप्रदेश में वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाते हुए किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण विकास को नई गति देने के लिए राज्य सरकार लगातार काम कर रही है। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने मध्यप्रदेश में वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश मेरा अपना घर है। किसान कल्याण वर्ष में यह सुनिश्चित किया जायेगा कि सरसों, तुअर, मूंग, उड़द और तिलहनों की खेती करने वाले किसानों को हर संभव सहायता मिले और राज्य ग्रामीण विकास के हर पैमाने पर अग्रणी बने।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना किसानों के लिए है सुरक्षा कवच : मंत्री श्री कंषाना

भोपाल : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुवाहाटी (असम) से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत 9 करोड़ 32 लाख से अधिक किसानों को 18 हजार 640 करोड़ की राशि हस्तांतरित की। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना की उपस्थिति में कार्यक्रम का सजीव प्रसारण कृषि उपज मंडी परिसर करोंद में सुना गया। इस अवसर पर विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और जनप्रतिनिधि भी कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए।

किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी की नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है। किसानों को खुशहाल एवं समृद्ध बनाने के लिए अनेक निर्णय लिए गए हैं। सशक्त एवं आत्मनिर्भर किसान बनाने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री सम्मान निधि सामाजिक सुरक्षा का माध्यम है। यह योजना किसानों के लिए सुरक्षा कवच का कार्य कर रही है।

कार्यक्रम में सचिव कृषि श्री निशांत बरवडे, प्रबंध संचालक मंडी बोर्ड श्री कुमार पुरुषोत्तम सहित अन्य अधिकारी और बड़ी संख्या में किसान मौजूद थे।

कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों से प्रदेश ने हासिल की महत्वपूर्ण उपलब्धि : मंत्री श्री वर्मा

डिजिटल फसल सर्वेक्षण में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर प्रदेश को केंद्र सरकार से मिली 130 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि

भोपाल : राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 को "कृषक कल्याण वर्ष" के रूप में मनाते हुए किसानों की आय वृद्धि, आधुनिक कृषि तकनीकों के विस्तार और पारदर्शी कृषि प्रबंधन की दिशा में लगातार कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में मध्यप्रदेश ने कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचार को अपनाते हुए डिजिटल फसल सर्वेक्षण के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।डीसीएस के सटीक, पारदर्शी और प्रभावी क्रियान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए केंद्र सरकार द्वारा मध्यप्रदेश को 130 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई है।

राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा फसल सर्वेक्षण प्रणाली (गिरदावरी) को आधुनिक, पारदर्शी और त्रुटिरहित बनाने के लिए जियो-फेंसिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई/एमएल) और सैटेलाइट डेटा जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का प्रभावी उपयोग किया जा रहा है।डिजिटल फसल सर्वेक्षण में जियो-फेंसिंग तकनीक के माध्यम से सर्वेक्षण का भौतिक सत्यापन सुनिश्चित किया गया है। इसके तहत सर्वेयर की खेत पर प्रत्यक्ष उपस्थिति अनिवार्य की गई है, जिससे बिना स्थल निरीक्षण के डेटा दर्ज नहीं किया जा सकेगा।

राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि जमीनी स्तर पर एकत्रित डेटा का मिलान एआई/एमएल तकनीक और सैटेलाइट इमेजरी से किया जा रहा है। इससे सर्वेक्षण की सटीकता और विश्वसनीयता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है और मानवीय त्रुटियों की संभावना न्यूनतम हुई है।किसानों को सर्वेक्षण और विभिन्न योजनाओं की जानकारी समय पर उपलब्ध कराने के लिए एसएमएस और एआई आधारित वॉइस कॉल की सुविधा शुरू की गई है। इससे किसानों को उनकी अपनी भाषा में सीधे मोबाइल पर आवश्यक सूचनाएं दी जा रही हैं।

डिजिटल क्रॉप सर्वे की प्रमुख विशेषताएँ

डिजिटल क्रॉप सर्वे (डीसीएस) में खेत पर उपस्थित होकर फसल की फोटो लेकर जानकारी दर्ज की जाती है। सर्वे डेटा का एआई एल्गोरिदम से क्रॉस-वेरिफिकेशन कर डेटा की शुद्धता सुनिश्चित की जा रही है।सर्वे डेटा का त्रिस्तरीय सत्यापन किया जा रहा है, जिसमें पटवारी स्तर पर जांच और विभिन्न विभागों द्वारा डेटा का उपयोग शामिल है। जियो-फेंसिंग तकनीक से यह भी सुनिश्चित किया गया है कि सर्वे केवल वास्तविक खेत स्थान पर पहुंचकर ही प्रारंभ हो।इंटरनेट उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में भी सर्वे के दौरान ली गई तस्वीरों की प्रामाणिकता और सही लोकेशन का सत्यापन प्रणाली द्वारा किया जाता है। साथ ही सर्वे को निर्धारित समयावधि से जोड़ा गया है, जिससे मोबाइल समय में छेड़छाड़ होने पर प्रणाली स्वतः सर्वे को रोक देती है। फसल क्षेत्र, उत्पादन अनुमान और योजनाओं के क्रियान्वयन में डेटा आधारित निर्णय लेने में भी यह प्रणाली सहायक सिद्ध हो रही है।

डिजिटल तकनीकों के प्रभावी उपयोग से मध्यप्रदेश में कृषि प्रबंधन अधिक सुदृढ़, पारदर्शी और किसान हितैषी बन रहा है। उन्नत तकनीक, पारदर्शी डेटा प्रबंधन और केंद्र-राज्य समन्वय से यह पहल किसानों के हित में मजबूत डिजिटल आधार तैयार कर रही है।

सहकारी समितियों के लिए रुपे किसान क्रेडिट कार्ड : ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में बड़ा कदम

नई दिल्ली। भारत में सहकारिता आंदोलन को नई ऊर्जा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा "सहकार से समृद्धि" के मंत्र के तहत कई महत्वपूर्ण पहलें की जा रही हैं। इसी क्रम में 'सहकारिता में सहकार' अभियान एक अभिनव और प्रभावी पहल के रूप में उभरकर सामने आया है, जिसने सहकारी समितियों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है।

पायलट से राष्ट्रव्यापी अभियान तक का सफर

इस अभियान की शुरुआत 21 मई 2023 को गुजरात के बनासकांठा जिला और पंचमहल जिला के जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों (DCCB) में एक पायलट परियोजना के रूप में की गई थी। पायलट की सफलता के बाद 15 जनवरी 2024 को इसे पूरे गुजरात राज्य में लागू कर दिया गया। बाद में, 19 सितंबर 2024 को इस अभियान को देशभर में लागू करने के लिए मानक प्रचालन प्रक्रिया (SOP) भी जारी की गई।

अभियान के प्रमुख उद्देश्य

'सहकारिता में सहकार' अभियान का मुख्य उद्देश्य सहकारी संस्थाओं को आधुनिक बैंकिंग सेवाओं से जोड़कर ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत:

- प्राथमिक कृषि साख समितियों (PACS), प्राथमिक डेयरी सहकारी समितियों (PDCS) और अन्य गैर-ऋण सहकारी समितियों को माइक्रो-एटीएम उपलब्ध कराना
- सभी सदस्यों को रूपे किसान क्रेडिट कार्ड (RuPay KCC)प्रदान करना
- सहकारी समितियों को जिला केंद्रीय सहकारी बैंक (DCCB) और राज्य सहकारी बैंक (STCB) से जोड़ना
- डोर-स्टेप बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से ग्रामीणों को सशक्त बनाना

उपलब्धियां: आंकड़ों में सफलता

28 फरवरी 2026 तक इस अभियान ने उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं:

- 33 लाख से अधिक नए बैंक खाते खोले गए
- 10,079 बैंक मित्र नियुक्त किए गए
- 10,265 माइक्रो-एटीएम वितरित किए गए
- 6.5 लाख रूपे किसान क्रेडिट कार्ड वितरित
- 9.5 लाख पशुपालन किसान क्रेडिट कार्ड जारी

ये आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि सहकारी ढांचे के माध्यम से वित्तीय सेवाओं की पहुंच तेजी से बढ़ रही है।

रूपे किसान क्रेडिट कार्ड: किसानों के लिए वरदान

रूपे किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) इस अभियान का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। इसके माध्यम से किसानों, दुग्ध उत्पादकों और ग्रामीण उद्यमियों को:

- कम या शून्य ब्याज दर पर ऋण सुविधा
- आसान और त्वरित ऋण उपलब्धता
- डिजिटल भुगतान की सुविधा
- माइक्रो-एटीएम के माध्यम से तत्काल नकदी निकासी

जैसी सुविधाएं मिल रही हैं। इससे किसानों की वित्तीय निर्भरता साहूकारों पर कम हो रही है और वे औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जुड़ रहे हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

इस पहल का सबसे बड़ा प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जा रहा है। किसान, दुग्ध उत्पादक, शिल्पकार और छोटे उद्यमी अब अपने ही गांव में बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा पा रहे हैं। माइक्रो-एटीएम के माध्यम से दूध भुगतान की राशि निकालना और डिजिटल लेन-देन करना अब सामान्य हो गया है।

गांवों में नकदी प्रवाह बढ़ने से:

- स्थानीय व्यापार और उत्पादन गतिविधियों को बढ़ावा मिला है
- रोजगार के अवसर बढ़े हैं
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थिरता आई है

सहकारी बैंकों की बढ़ती भूमिका

'सहकारिता में सहकार' अभियान ने यह सिद्ध कर दिया है कि सहकारी बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन का सबसे प्रभावी माध्यम बन सकते हैं। इस अभियान के माध्यम से उनकी पहुंच और कार्यक्षमता दोनों में विस्तार हुआ है।

'सहकारिता में सहकार' अभियान और रूपे किसान क्रेडिट कार्ड जैसी पहलें भारत के ग्रामीण विकास मॉडल को नई दिशा दे रही हैं। यह न केवल किसानों और ग्रामीणों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही हैं, बल्कि सहकारिता के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को भी मजबूती प्रदान कर रही हैं।

मछुआ सहकारी समिति बिलहरी में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित

भोपाल । सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र, जबलपुर द्वारा मछुआ सहकारी समिति मर्यादित, बिलहरी (जिला कटनी) में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष श्री शिव प्रसाद ढीमर सहित अन्य सदस्यों ने सक्रिय सहभागिता दर्ज की।प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को नेतृत्व विकास कार्यक्रम के अंतर्गत प्रभावी नेतृत्व के गुण, समूह प्रबंधन, निर्णय लेने की क्षमता एवं सामूहिक कार्यशैली के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही सहकारी समिति के सुचारू संचालन से संबंधित विषयों अभिलेख संधारण, वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता एवं सदस्य सहभागिता पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

इस अवसर पर मत्स्य पालन से संबंधित व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी भी प्रदान की गई। प्रशिक्षकों द्वारा बताया गया कि वैज्ञानिक पद्धति से मत्स्य पालन करने के लिए तालाब की उचित तैयारी, जल की गुणवत्ता (pH, ऑक्सीजन स्तर) का संतुलन, गुणवत्तायुक्त मत्स्य बीज (फिश सीड) का चयन एवं समय पर संचयन अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही संतुलित आहार प्रबंधन, नियमित देखरेख एवं रोग नियंत्रण उपायों की जानकारी भी दी गई। प्रतिभागियों को यह भी बताया गया कि मिश्रित मत्स्य पालनअपनाकर विभिन्न प्रजातियों की मछलियों का एक साथ पालन कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

नैनो उर्वरकों और ड्रोन तकनीक से कृषि में क्रांतिकारी बदलाव : सरकार की बड़ी पहल

सरकार ने नैनो उर्वरकों को अपनाने और कृषि क्षेत्र में ड्रोन-आधारित बदलाव को लेकर महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डाला

यूरिया के विकल्प का आकलन करने और नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में सुधार लाने के लिए एनपीसी और आईसीएआर के साथ नए सरकारी अध्ययन की शुरूआत

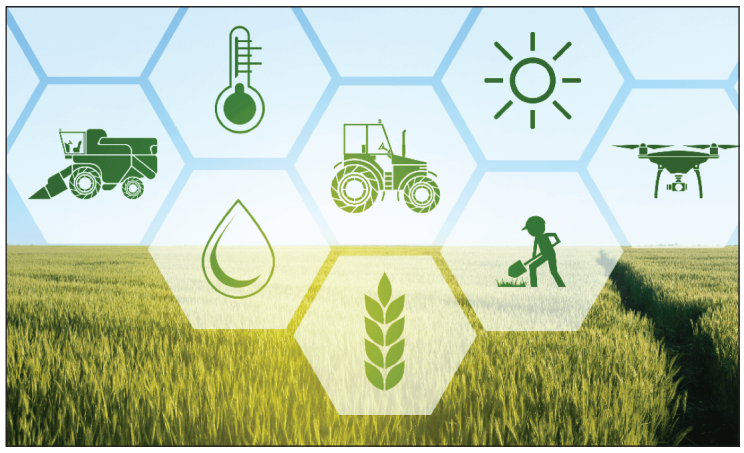

दिल्ली, केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय ने नैनो उर्वरकों के उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। इनकी शुरुआत से अब तक कुल 500 मिलीलीटर की 1,593.37 लाख बोतलों की बिक्री हो चुकी है। इस कुल बिक्री में 1,219.27 लाख नैनो यूरिया की बोतलें और 374.10 लाख नैनो डीएपी की बोतलें शामिल हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (एसएयू) के अंतर्गत आने वाले संस्थानों द्वारा किए गए क्षेत्रीय परीक्षणों से नैनो उर्वरकों की प्रभावशीलता सिद्ध हुई है। अध्ययनों से पता चलता है कि पारंपरिक उर्वरकों की अनुशंसित आधार खुराक के साथ नैनो यूरिया का पत्तों पर छिड़काव करने से यूरिया की खपत में 25-50 प्रतिशत की कमी के साथ तुलनीय उपज प्राप्त की जा सकती है , जिससे विभिन्न फसलों में उपज में 3 से 8 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है। इसी प्रकार, नैनो डीएपी पर किए गए परीक्षणों से पता चला है कि फॉस्फोरस उर्वरकों के आंशिक विकल्प (50 प्रतिशत तक) उपयुक्त अनुप्रयोग विधियों के साथ, कुछ मामलों में, जैसे आलू की खेती में, फसल की बेहतर पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

इन इनपुट की दीर्घकालिक प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए, सरकार ने कई अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की हैं, जिनमें 14 नवंबर, 2025 को राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद के साथ हस्ताक्षरित चरण-II अध्ययन भी शामिल है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक यूरिया के विकल्प की सीमा का मूल्यांकन करना है। इसके अतिरिक्त, 3 नवंबर, 2025 को आईसीएआर के साथ एक पांच वर्षीय नेटवर्क परियोजना शुरू की गई, जिसका उद्देश्य विभिन्न कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में नाइट्रोजन उपयोग दक्षता का मूल्यांकन करना है। अध्ययनों से आंशिक विकल्प के साथ बेहतर उत्पादकता दिखाई देने के बावजूद, सरकार उच्च प्रतिस्थापन स्तरों विशेष रूप से कम उपजाऊ मिट्टी में, जैसे कि 50 प्रतिशत, पर देखी गई असंगत प्रदर्शन और पोषक तत्वों की कमी से संबंधित चिंताओं को दूर करने का प्रयास कर रही है। सुधारात्मक उपायों में इस्तेमाल संबंधी प्रोटोकॉल का मानकीकरण और व्यापक जागरूकता कार्यक्रमों और प्रदर्शनों के माध्यम से संतुलित उर्वरक के इस्तेमाल को बढ़ावा देना शामिल है।

सरकार ने कई सुधारात्मक उपाय किए हैं, जिनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के माध्यम से दीर्घकालिक, बहु-स्थानिक अनुसंधान करना शामिल है, ताकि फसलों पर प्रभाव, पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता और मिट्टी पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन किया जा सके; अनुप्रयोग प्रोटोकॉल का मानकीकरण करना और किसान जागरूकता कार्यक्रमों, प्रदर्शनों और प्रशिक्षण के माध्यम से संतुलित उर्वरक उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है। इसके अलावा, देश में नैनो उर्वरकों के उचित और कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए ड्रोन-आधारित छिड़काव सहित पत्तों पर छिड़काव की प्रणालियों जैसी उपयुक्त अनुप्रयोग प्रौद्योगिकियों तक पहुंच में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव के केंद्र शासित प्रदेशों सहित पूरे देश के किसानों के बीच नैनो उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:

i. नैनो उर्वरकों के उपयोग को जागरूकता शिविरों, वेबिनारों, फील्ड प्रदर्शनों, किसान सम्मेलनों और क्षेत्रीय भाषाओं में बनी फिल्मों आदि जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बढ़ावा दिया जाता है।
ii. संबंधित कंपनियों द्वारा प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्रों (पीएमकेएसके) पर नैनो उर्वरक उपलब्ध कराए जाते हैं।
iii. उर्वरक विभाग द्वारा नियमित रूप से जारी की जाने वाली मासिक आपूर्ति योजना में नैनो उर्वरकों को शामिल किया गया है।
iv. नैनो उर्वरकों, जैसे नैनो यूरिया के फसल की पत्तियों पर छिड़काव द्वारा सुगम अनुप्रयोग और उपयोग के लिए, 'किसान ड्रोन' जैसे नवोन्मेषी छिड़काव विकल्पों और खुदरा केंद्रों पर बैटरी चालित स्प्रेयरों के वितरण जैसी पहल की जा रही हैं। इसके लिए, ग्राम स्तरीय उद्यमियों के माध्यम से पायलट प्रशिक्षण और अनुकूलित किराये पर छिड़काव सेवाएं सक्रिय रूप से प्रोत्साहित की जा रही हैं।
v. कृषि विभाग ने उर्वरक कंपनियों के सहयोग से देश के सभी 15 कृषि-जलवायु क्षेत्रों में नैनो डीएपी को अपनाने के लिए एक महा अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत परामर्श और जमीनी स्तर पर प्रदर्शन किए जा रहे हैं। इसके अलावा, कृषि विभाग ने उर्वरक कंपनियों के सहयोग से देश के 100 जिलों में नैनो यूरिया प्लस के जमीनी स्तर पर प्रदर्शन और जागरूकता कार्यक्रम भी शुरू किए हैं।

सरकार नैनो उर्वरकों के अनुप्रयोग प्रौद्योगिकी तक पहुंच बढ़ाने के लिए नमो ड्रोन दीदी (एनडीडी) योजना चला रही है, जिसके लिए 2023-24 से 2025-26 की अवधि के लिए 1,261 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। इस योजना के तहत, उर्वरक विभाग ने उर्वरक कंपनियों के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को 1,094 ड्रोन वितरित किए हैं, जिनमें महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के लाभार्थी भी शामिल हैं। इनमें से 500 ड्रोन विशेष रूप से एनडीडी योजना के तहत दिए गए हैं। दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव केंद्र शासित प्रदेशों को कोई ड्रोन आवंटित नहीं किया गया है। सभी लाभार्थियों को डीजीसीए द्वारा अधिकृत रिमोट पायलट प्रशिक्षण संगठनों (आरपीटीओ) में प्रशिक्षण दिया गया है, जिसमें ड्रोन संचालन और तरल उर्वरकों और कीटनाशकों के छिड़काव जैसे क्षेत्र अनुप्रयोगों को शामिल किया गया है।

कृषि में ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, कृषि यंत्रीकरण उप-मिशन (एसएमएएम) के तहत आईसीएआर को 52.50 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। 2022-23 से 2025-26 के दौरान (15 मार्च 2026 तक), आईसीएआर संस्थानों, कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों ने 297 ड्रोन खरीदे और 36,882 प्रदर्शन आयोजित किए, जिनमें 38,280 हेक्टेयर क्षेत्र शामिल था और 426,579 लाख से अधिक किसानों को लाभ हुआ।

नाबार्ड प्रायोजित सॉफ्टकॉब प्रशिक्षण आयोजित

पैक्स प्रबंधकों को वित्तीय एवं सहकारिता नीतियों की दी गई विस्तृत जानकारी

भोपाल। नाबार्ड प्रायोजित एवं मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ, भोपाल द्वारा संचालित सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव के तत्वावधान में एक दिवसीय सॉफ्टकॉब (SoftCoB)प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, दतिया के सभागार में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जिले की प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों (पैक्स) के प्रबंधकों तथा सहकारिता विभाग से जुड़े अधिकारियों को नवीन वित्तीय प्रावधानों, कर संबंधी नियमों एवं सहकारिता क्षेत्र की अद्यतन नीतियों की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ उप आयुक्त सहकारिता श्री अखिलेश शुक्ला द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा कि सहकारी समितियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समय-समय पर आयोजित होने वाले ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल प्रबंधकों की कार्यक्षमता में वृद्धि करते हैं, बल्कि शासन की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में भी सहायक सिद्ध होते हैं। प्रशिक्षण सत्र के दौरान जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, दतिया के प्रशासन प्रबंधक श्रीभानू खरेने पैक्स से संबंधित वित्तीय प्रबंधन एवं कराधान के विषयों पर विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने विशेष रूप से इनकम टैक्स, जीएसटी एवं टीडीएससे जुड़े प्रावधानों, उनकी गणना की प्रक्रिया, समय पर रिटर्न दाखिल करने के महत्व तथा व्यवहारिक समस्याओं के समाधान पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में सहकारी संस्थाओं के लिए कर नियमों की सटीक जानकारी अत्यंत आवश्यक है, जिससे पारदर्शिता एवं सुचारु संचालन सुनिश्चित किया जा सके।

इसी क्रम में सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव के प्राचार्य श्री शिरीष पुरोहितने प्रतिभागियों को मध्यप्रदेश शासन एवं भारत सरकार की सहकारिता नीतियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने सहकारिता आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान परिदृश्य एवं भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सहकारी संस्थाएँ किसानों, ग्रामीणों एवं लघु उद्यमियों के लिए समावेशी विकास का सशक्त माध्यम हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा सहकारिता क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने हेतु निरंतर विभिन्न योजनाएँ एवं सुधारात्मक पहल की जा रही हैं।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न विषयों पर जिज्ञासाएँ व्यक्त की गईं, जिनका विशेषज्ञों द्वारा संतोषजनक समाधान किया गया। साथ ही उन्हें सहकारिता क्षेत्र में हो रहे नवीन प्रशासनिक परिवर्तनों एवं प्रक्रियाओं से भी अवगत कराया गया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर नाबार्ड, दतिया के डीडीएम श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि सहकारी संस्थाओं के प्रभावी एवं पारदर्शी संचालन के लिए प्रबंधकों का प्रशिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थागत क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दतिया जिले की 55 पैक्स समितियों के प्रबंधकों सहित सहकारिता विभाग एवं जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अधिकारीगण सक्रिय रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव के प्रशिक्षक श्री हृदेश रॉय द्वारा किया गया।

श्वेत क्रांति 2.0 : सहकारिता के माध्यम से डेयरी क्षेत्र में समावेशी विकास की नई दिशा

नई दिल्ली, भारत सरकार द्वारा डेयरी क्षेत्र को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के उद्देश्य से शुरू की गई "श्वेत क्रांति 2.0" पहल देश के ग्रामीण आर्थिक ढांचे को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है। सहकारिता मंत्रालय तथा मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय के संयुक्त प्रयास से 19 सितंबर 2024 को प्रारंभ की गई यह योजना न केवल दूध उत्पादन बढ़ाने बल्कि सहकारी संस्थाओं के माध्यम से किसानों की आय और सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने पर केंद्रित है।

सहकारिता आधारित विकास का नया मॉडल

श्वेत क्रांति 2.0 का मूल आधार सहकारिता मॉडल है, जिसके माध्यम से सरकार उन पंचायतों तक डेयरी गतिविधियों का विस्तार करना चाहती है जो अब तक इस क्षेत्र से वंचित रही हैं। योजना के तहत अगले पांच वर्षों में देशभर में 75,000 नई दुग्ध सहकारी समितियों के गठन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके साथ ही दुग्ध खरीद में 50 प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य भी रखा गया है।

यह पहल किसानों को संगठित बाजार से जोड़ने, रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा विशेष रूप से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। वर्तमान में लगभग 1.7 करोड़ किसान डेयरी सहकारी समितियों से जुड़े हुए हैं, जिनमें से करीब 38 प्रतिशत महिलाएं हैं।

भारत: वैश्विक डेयरी शक्ति

भारत वर्ष 1998 से विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बना हुआ है और वर्तमान में वैश्विक दूध उत्पादन में उसका लगभग 25 प्रतिशत योगदान है। यह उपलब्धि केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न डेयरी विकास योजनाओं और नीतिगत सुधारों का परिणाम है।

देश में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 485 ग्राम प्रतिदिन तक पहुंच चुकी है, जो भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) द्वारा अनुशंसित 300 ग्राम से कहीं अधिक है। यह न केवल उत्पादन वृद्धि को दर्शाता है बल्कि देश में पोषण सुरक्षा के स्तर में सुधार का भी संकेत देता है।

उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार

पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा लागू की गई योजनाओं, विशेषकर राष्ट्रीय गोकुल मिशन, के परिणामस्वरूप पशुओं की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

- वर्ष 2013-14 में प्रति पशु औसत उत्पादकता 1648 किलो ग्राम थी, जो 2024-25 में बढ़कर 2251 किलोग्राम हो गई है (36.63% वृद्धि)।
- स्वदेशी नस्लों की उत्पादकता में लगभग 44.89 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।
- भैंसों की उत्पादकता में भी 25.80 प्रतिशतकी वृद्धि हुई है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि भारत न केवल उत्पादन में अग्रणी है, बल्कि उत्पादकता सुधार के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है।

मध्य प्रदेश में सहकारिता विस्तार की बड़ी संभावना

श्वेत क्रांति 2.0 के तहत मध्य प्रदेश को अगले पांच वर्षों में 5,064 नई दुग्ध सहकारी समितियों के गठन का लक्ष्य दिया गया है। यह राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का एक बड़ा अवसर है।

मध्य प्रदेश पहले से ही कृषि और पशुपालन में अग्रणी राज्यों में शामिल है। इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन से राज्य में किसानों की आय में वृद्धि, ग्रामीण रोजगार सृजन और महिला सशक्तिकरण को नई गति मिलने की संभावना है।

डिजिटल तकनीक से पारदर्शिता और दक्षता

डेयरी क्षेत्र में डिजिटल तकनीकों का तेजी से उपयोग इस योजना की एक प्रमुख विशेषता है।

डेटा प्रोसेसर मिल्क कलेक्शन यूनिट (DPMCU) और ऑटोमेटेड मिल्क कलेक्शन यूनिट (AMCU) जैसी प्रणालियों के माध्यम से:

- दूध की गुणवत्ता का सटीक परीक्षण
- डिजिटल रिकॉर्ड प्रबंधन
- किसानों के बैंक खातों में सीधे भुगतान

सुनिश्चित किया जा रहा है। बिहार, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में इन प्रणालियों का सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है, जिससे पारदर्शिता और विश्वास में वृद्धि हुई है।

सरकारी योजनाओं का समेकित प्रभाव

श्वेत क्रांति 2.0 को सफल बनाने में कई प्रमुख योजनाओं का योगदान है:

- राष्ट्रीय दुग्ध विकास कार्यक्रम (NPDD) – दुग्ध संग्रहण, परीक्षण और विपणन अवसंरचना का विकास
- पशुपालन अवसंरचना विकास कोष (AHIDF) – डेयरी प्रोसेसिंग और वैल्यू एडिशन को बढ़ावा
- राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM) – पशुपालन में उद्यमिता विकास
- पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम (LHDCP) – पशु स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण
- SDCFPO योजना – सहकारी संस्थाओं को कार्यशील पूंजी हेतु ब्याज सहायता

इन योजनाओं के समन्वित क्रियान्वयन से डेयरी क्षेत्र में लागत कम करने, उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित की जा रही है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव

डेयरी क्षेत्र ग्रामीण भारत के लिए आय का एक स्थायी और नियमित स्रोत है। श्वेत क्रांति 2.0 के माध्यम से:

- छोटे और सीमांत किसानों को नियमित आय का स्रोत मिलेगा
- महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और आत्मनिर्भरता बढ़ेगी
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे
- किसानों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ने में सहायता मिलेगी

इस प्रकार यह योजना न केवल आर्थिक विकास बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी माध्यम बन रही है।

श्वेत क्रांति 2.0 भारत के डेयरी क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी पहल है, जो सहकारिता मॉडल के माध्यम से समावेशी विकास को बढ़ावा देती है। यह योजना किसानों की आय बढ़ाने, महिलाओं को सशक्त बनाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ-साथ भारत को वैश्विक डेयरी नेतृत्व में और सुदृढ़ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

आने वाले वर्षों में, यदि इस योजना का प्रभावी और पारदर्शी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाता है, तो यह न केवल "दूधउत्पादन" बल्कि "ग्रामीण समृद्धि" की नई क्रांति के रूप में स्थापित हो सकती है।

बड़नगर के लखेसरा सोहड़ में एफपीओ कार्यालय का उद्घाटन

भोपाल, लखेसरा सोहड़ क्षेत्र में श्री विवेकानंद कृषक उत्पादक सहकारी संस्था मर्यादित के एफपीओ (FPO) कार्यालय का उद्घाटन क्षेत्र के माननीय विधायक श्री जितेन्द्र उदय सिंह जी पंड्या के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह जी पंड्या, सेवा सहकारी संस्था लखेसरा के PACS प्रबंधक श्री मनोहर जी पंड्या, संस्था के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री रवि पोरवाल सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक, किसान एवं युवा बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए विधायक श्री पंड्या ने कहा कि किसानों की आर्थिक मजबूती के लिए एफपीओ एक प्रभावी माध्यम है। इससे किसानों को उनके उत्पादों का बेहतर मूल्य मिलेगा और वे संगठित होकर आत्मनिर्भर बन सकेंगे। उन्होंने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए हर संभव सहयोग का आश्वासन भी दिया। संस्था के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह जी पंड्या ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यालय किसानों के हित में अनेक योजनाओं को गति देगा और क्षेत्र के कृषकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित लोगों ने संस्था की प्रगति और किसानों की समृद्धि की कामना की।

(पृष्ठ 1 का शेष)

कृषक कल्याण वर्ष में ...

कार्यशाला में जैविक खेती, उद्यानिकी में नर्सरी, कोदो-रागी जैसे मोटे अनाजों से आइसक्रीम निर्माण, केज कल्चर सहित अनेक महत्वपूर्ण तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। मत्स्य पालन, संस्कृति, पर्यटन, खाद्य एवं नवकरणीय ऊर्जा सहित कई विभागों ने अपनी योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

अपर मुख्य सचिव कुटीर और ग्रामोद्योग विभाग श्री के.सी. गुप्ता ने मध्यप्रदेश में छोटे और कुटीर उद्योगों के प्रोत्साहन के लिए संचालित योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभिन्न शिल्पों के विशेषज्ञ कलाकारों और अन्य शिल्पियों की सहायता के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। शिल्पियों को उत्पादों की बिक्री के लिए भी आवश्यक मार्गदर्शन और सहायता प्रदान की जा रही है।

कृषि सचिव श्री निशांत वरवड़े ने प्रेजेंटेशन में बताया कि 11 जनवरी 2026 को कृषि कल्याण वर्ष का शुभारंभ किया गया है। दृष्टि पत्र में आत्मनिर्भर किसान, उन्नत कृषि और मूल्य-श्रृंखला आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था के माध्यम से समृद्ध प्रदेश का निर्माण करने का उल्लेख है। मध्यप्रदेश एग्रीस्टैक योजना में देश में प्रथम स्थान पर है। इसमें सभी किसानों का डेटा सिंगल क्लिक पर उपलब्ध होता है। योजना में फार्मर रजिस्ट्री, लैंड रजिस्ट्री और फसल रजिस्ट्री यानी गिरदावरी जैसे कार्य किए जा रह हैं। ई-विकास के माध्यम से किसानों को सुगमता पूर्वक खाद वितरण कार्य किया गया है। प्रदेश में खाद की कोई कमी नहीं है। ग्रीष्मकालीन उड़द फसल के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार ने प्रति क्विंटल 600 रुपए बोनस देने का निर्णय लिया है। गेहूं एवं अन्य फसलों की कटाई और नरवाई प्रबंधन के लिए कृषि यंत्र योजना चलाई जा रही है। प्रदेश की गौशालाओं को भूसा निर्माण के लिए भी यंत्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं। प्रदेश के वृंदावन ग्रामों को कृषि ग्राम के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य है। विधायक अपने क्षेत्र के श्रेष्ठ कृषि ग्रामों को विधायक ट्रॉफी से सम्मानित करेंगे।

प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन श्री राघवेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि मध्यप्रदेश के कृषि आधारित औद्योगिक विकास के लिए अपार संभावनाएं हैं। हमारा प्रदेश मसाले एवं दलहन उत्पादन में भारत में प्रथम, खाद्यान्न उत्पादन में द्वितीय और दूध, फल-सब्जी एवं फूलों के उत्पादन में तृतीय स्थान पर है। हमारे देश में दूध-फल-सब्जी और दलहन फसलों की प्रोसेसिंग लगभग 15 प्रतिशत के आसपास है, इसे बढ़ावा देने की आवश्यकता है। प्रदेश में आज खाद्य प्रसंस्करण के 4 हजार से अधिक प्लांट हैं। प्रदेश में शासकीय एवं निजी फूड पार्क और मसाला पार्क काम कर रहे हैं। पिछले दो साल में खाद्य प्रसंस्करण एवं मसाला उत्पादन क्षेत्र की 47 कंपनियों ने 20 हजार करोड़ से अधिक का निवेश प्रस्ताव दिया है। शाजापुर-आगर-मालवा अंचल में कनाडा की एक कंपनी की यूनिट स्थापित होने जा रही है। प्रदेश का वर्तमान एग्री निर्यात 18 हजार करोड़ है, जिसे वर्ष 2028 तक 30 हजार करोड़ तक करने का लक्ष्य है। प्रदेश में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र पर आधारित 36 ओडीओपी हैं। कृषि, वस्त्र एवं अन्य क्षेत्रों को मिलाकर हमें 27 जीआई टैग मिल चुके हैं। इनकी संख्या बढ़ाने की योजना है। कपास उत्पादन में मध्यप्रदेश का देश में 5वां स्थान है। देश में गैर-जीएमओ ऑर्गेनिक कपास उत्पादन का 47 प्रतिशत हिस्सा मध्यप्रदेश में है। कपास उत्पादक किसानों को लाभान्वित करने के लिए धार में देश के पहले पीएम मित्र पार्क का भूमि-पूजन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है। यहां 2158 एकड़ क्षेत्र में टैक्सटाइल पार्क से 5 लाख किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा और करीब 3 लाख लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर मिलेंगे। प्रदेश में 23 लाख एमएसएमई इकाइयां हैं, इनमें 5 लाख से अधिक मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर की हैं। प्रदेश में स्टार्ट-अप की संख्या 7000 हो गई है। करीब 600 स्टार्ट-अप कृषि आधारित हैं।

मछुआ कल्याण तथा मत्स्य विकास विभाग के प्रेजेंटेशन में बताया गया कि मध्य प्रदेश एकीकृत मत्स्योद्योग नीति 2026 केज कल्चर योजना लागू की गई है। मुख्यमंत्री मछुआ समृद्धि योजना के लिए 100 करोड रुपए का विशेष प्रावधान किया गया है। सहकारिता विभाग के अंतर्गत शून्य प्रतिशत ब्याज पर फसल ऋण वितरण के लिए 25 हजार करोड़ रुपए का लक्ष्य रखा गया है। ऊर्जा विभाग के अंतर्गत कृषक हितग्राही योजनाएं संचालित हैं। एक हेक्टेयर तक की भूमि वाले अनुसूचित जाति, जनजाति के पांच हार्स पावर तक की क्षमता वाले कृषि पंप उपभोक्ताओं को निशुल्क विद्युत प्रदाय किया जा रहा है। समाधान योजना के माध्यम से उपभोक्ताओं को बकाया विलंबित भुगतान के सर चार्ज पर छूट प्रदान की जा रही है।

उद्यानिकी विभाग के सचिव श्री जॉन किंग्स्ले ने कहा कि वर्तमान में उद्यानिकी क्षेत्रफल 10 प्रतिशत है, जिसे दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया है। इसे 5 फसलों में बांटा गया है, जैसे- फल, सब्जी, मसाला, पुष्प, औषधीय एवं सुगंधित फसलों की खेती को प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रदेश के चार जिलों में शुरू की गई मखाना खेती को अन्य जिलों तक बढ़ाया जाएगा।

दमोह में नाबार्ड प्रायोजित सॉफ्टकॉब प्रशिक्षण सम्पन्न, बी-पैक्स कार्मिकों को ERP एवं डिजिटल सेवाओं का मिला प्रशिक्षण

भोपाल। सहकारी संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण एवं डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नाबार्ड प्रायोजित तथा मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ, भोपाल द्वारा संचालित सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव के माध्यम से दो दिवसीय सॉफ्टकॉब प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, दमोह के सभागृह में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन दमोह जिले के सहकारी निरीक्षक श्री उमेश खटीक, बैंक लेखा प्रभारी श्री घनश्याम दुबे एवं फील्ड प्रभारी श्री शुभम सिंह द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में अतिथियों ने सहकारी संस्थाओं में तकनीकी उन्नयन एवं पारदर्शिता की आवश्यकता पर बल देते हुए सॉफ्टकॉब योजना की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

प्रथम दिवस के तकनीकी सत्र में बैंक के चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री निकुंज जैन द्वारा पैक्स (प्राथमिक कृषि साख समितियों) से संबंधितइनकम टैक्स, जीएसटी एवं टीडीएसकी जटिलताओं एवं अनुपालन संबंधी बारीकियों को विस्तारपूर्वक समझाया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को वित्तीय अनुशासन एवं समयबद्ध रिटर्न फाइलिंग के महत्व से अवगत कराया।

इसके पश्चात सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव के प्राचार्य श्री शिरीष पुरोहित ने मध्यप्रदेश एवं केंद्र सरकार की सहकारिता नीतियों का विस्तृत विवेचन करते हुए बताया कि वर्तमान में सहकारी संस्थाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं ERP आधारित प्रणाली से जोड़ना समय की प्रमुख आवश्यकता है, जिससे संस्थाओं की कार्यक्षमता एवं पारदर्शिता में वृद्धि हो सके।

कार्यक्रम में दमोह जिले के कुल56 बी-पैक्स प्रबंधकों ने सक्रिय रूप से सहभागिता की, जिन्होंने प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न तकनीकी एवं प्रबंधन विषयों पर जानकारी प्राप्त की।

द्वितीय दिवस दमोह जिले के CSC प्रभारी श्री प्रशांत कुमार साहू द्वाराकॉमन सर्विस सेंटर (CSC) सेवाओंकी विस्तृत जानकारी दी गई तथा प्रतिभागियों की समस्याओं का समाधान किया गया। उन्होंने बताया कि CSC सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न सरकारी एवं डिजिटल सेवाओं की पहुंच को और अधिक सुलभ बनाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, इफको के जिला अधिकारी श्री प्रतीक गुप्ता द्वारा इफको के उर्वरक उत्पादों एवं विभिन्न योजनाओं की जानकारी साझा की गई, जिससे किसानों एवं सहकारी समितियों को मिलने वाले लाभों पर प्रकाश डाला गया।

समापन सत्र में जिले के सहायक आयुक्त श्री सौरभ जैन द्वारा प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित किए गए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम सहकारी संस्थाओं की कार्यक्षमता बढ़ाने एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के सफल संचालन में बैंक के फील्ड अधिकारी श्री शुभम सिंह एवं प्रशिक्षण केंद्र के लिपिक श्री खूबचंद सेन का विशेष योगदान रहा, जिसकी सभी उपस्थितजनों ने सराहना की।

यह दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बी-पैक्स प्रबंधकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ, जिसने उन्हें न केवल सॉफ्टकॉब योजना एवं ERP प्रणाली की समझ प्रदान की, बल्कि डिजिटल सेवाओं एवं वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में भी सशक्त बनाया।

दुग्ध सहकारी समिति आवलाय में सहकारिता विषयक प्रशिक्षण सम्पन्न

भोपाल। सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र, इंदौर द्वारा तहसील महू अंतर्गत ग्राम आवलाय स्थित दुग्ध सहकारी समिति मर्यादित में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समिति के सचिव श्री संजय तवर सहित समिति के सदस्यगण उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को सहकारिता की पृष्ठभूमि एवं उसके विकास क्रम की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षकों द्वारा सहकारिता के मूल सिद्धांतों - स्वैच्छिक सदस्यता, लोकतांत्रिक नियंत्रण, आर्थिक सहभागिता, स्वायत्तता एवं पारदर्शिता - को सरल एवं व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया।इस अवसर पर दुग्ध उत्पादन क्षेत्र में सहकारिता के महत्व पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। बताया गया कि सहकारी मॉडल के माध्यम से दुग्ध उत्पादक किसान संगठित होकर अपनी आय में वृद्धि, संसाधनों का बेहतर उपयोग एवं विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ बना सकते हैं।इसके साथ ही दुग्ध क्षेत्र से संबंधित राज्य शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी दी गई, जैसे दुग्ध सहकारी समितियों के सुदृढ़ीकरण कार्यक्रम, दूध संग्रहण एवं शीतकरणस्थापना हेतु सहायता, पशुपालन विभाग की डेयरी विकास योजनाएं तथा दूध उत्पादक किसानों को प्रोत्साहन प्रदान करने वाली अनुदान योजनाएं। प्रशिक्षकों द्वारा बताया गया कि इन योजनाओं के माध्यम से दुग्ध उत्पादकों को तकनीकी मार्गदर्शन, वित्तीय सहायता, पशु स्वास्थ्य सेवाएं, कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित चारे की उपलब्धता एवं सुदृढ़ विपणन सुविधाएं प्राप्त होती हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन में वृद्धि एवं किसानों की आय में सुधार संभव होता है।कार्यक्रम के समापन पर समिति के सचिव श्री संजय तवर द्वारा समिति की कार्यप्रणाली से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया तथा सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र, इंदौर के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

सहकारी समितियों की पारदर्शिता की ओर बड़ा कदम : 54 प्रबंधकों को आयकर, जीएसटी व लेखा-जोखा का विशेष प्रशिक्षण

"सहकारी संस्थाओं में पारदर्शिता और सही लेखांकन से ही किसानों का विश्वास मजबूत होगा और विकास संभव होगा।"- श्री नीरज दुरेजा, सीईओ, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, सागर

नाबार्ड प्रायोजित कार्यक्रम में वित्तीय अनुशासन, अनुपालन और क्षमता निर्माण पर जोर

54 समिति प्रबंधकों की सक्रिय सहभागिता

आयकर, जीएसटी एवं टीडीएस पर व्यावहारिक प्रशिक्षण

सहकारिता नीतियों की विस्तृत जानकारी

इफको योजनाओं से जुड़ाव

पारदर्शिता एवं वित्तीय अनुशासन पर विशेष जोर

भोपाल, सहकारी क्षेत्र को मजबूत, पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए नाबार्ड प्रायोजित एवं मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ, भोपाल द्वारा संचालित सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव ने जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, सागर के सभागृह में एक दिवसीय सॉफ्टकॉब प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण में जिले की विभिन्न सहकारी समितियों के कुल 54 प्रबंधकों ने भाग लिया।कार्यक्रम का उद्घाटन बैंक के सीईओ श्री नीरज दुरेजा एवं सहकारी निरीक्षक श्री जे.पी. परसानिया द्वारा किया गया। उद्घाटन अवसर पर वक्ताओं ने सहकारी संस्थाओं में पारदर्शिता, वित्तीय अनुशासन एवं समयबद्ध लेखा-जोखा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया।

सहकारिता में पारदर्शिता ही विकास की कुंजी

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सीईओ श्री नीरज दुरेजा ने कहा कि सहकारी समितियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। यदि इन संस्थाओं में पारदर्शिता, सही लेखांकन और नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाए, तो यह किसानों की आर्थिक स्थिति में व्यापक सुधार ला सकती हैं।उन्होंने कहा कि आज के समय में आयकर, जीएसटी और टीडीएस जैसे वित्तीय प्रावधानों की जानकारी प्रत्येक समिति प्रबंधक के लिए अनिवार्य हो गई है। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल उनकी कार्यक्षमता बढ़ाते हैं, बल्कि उन्हें बदलते नियमों के अनुरूप कार्य करने में सक्षम बनाते हैं।

आयकर, जीएसटी एवं टीडीएस पर विशेषज्ञ मार्गदर्शन

प्रशिक्षण के तकनीकी सत्र में बैंक के चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री आर.डी. बड़ोनिया ने पैक्स (PACS) से संबंधित आयकर, जीएसटी एवं टीडीएस के प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने निम्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला:

- सहकारी समितियों के लिए आयकर रिटर्न फाइलिंग की प्रक्रिया
- जीएसटी पंजीयन एवं अनुपालन के नियम
- टीडीएस कटौती एवं समय पर जमा करने की अनिवार्यता
- लेखा-जोखा रखने के आधुनिक एवं सरल तरीके

उन्होंने स्पष्ट किया कि वित्तीय अनियमितताओं से बचने के लिए समय पर रिकार्ड संधारण और पारदर्शी लेखांकन अत्यंत आवश्यक है। इससे समितियों को सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में भी आसानी होती है।

इफको योजनाओं से किसानों को लाभ पहुंचाने पर जोर

कार्यक्रम में इफको अधिकारी श्री प्रतीक गुप्ता ने सहकारी समितियों की भूमिका को रेखांकित करते हुए इफको के उत्पादों एवं योजनाओं की जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि सहकारी समितियां किसानों तक गुणवत्तापूर्ण उर्वरक, कृषि सेवाएं और तकनीकी सहायता पहुंचाने का सशक्त माध्यम हैं। इफको की विभिन्न योजनाएं किसानों की उत्पादकता बढ़ाने एवं लागत कम करने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

केंद्र एवं राज्य की सहकारिता नीतियों की जानकारी

सहकारी प्रशिक्षण केंद्र, नौगांव के प्राचार्य श्री शिरीष पुरोहित ने मध्यप्रदेश शासन एवं केंद्र सरकार की सहकारिता नीतियों पर विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में सहकारिता क्षेत्र में कई सुधारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य सहकारी संस्थाओं को अधिक सशक्त, आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बनाना है।

उन्होंने यह भी बताया कि सहकारिता के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं और किसानों की आय को स्थायी रूप से बढ़ाया जा सकता है।

प्रशिक्षण से बढ़ेगी प्रबंधकों की दक्षता

इस एक दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले 54 समिति प्रबंधकों ने विभिन्न विषयों पर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने अपनी समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान भी विशेषज्ञों से प्राप्त किया।प्रशिक्षण का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक जानकारी देना नहीं था, बल्कि प्रबंधकों को व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाना था, ताकि वे अपने-अपने क्षेत्रों में बेहतर प्रबंधन एवं सेवा प्रदान कर सकें।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर सीईओ श्री नीरज दुरेजा द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। उन्होंने प्रबंधकों से अपील की कि वे प्रशिक्षण में सीखी गई बातों को व्यवहार में लाएं और अपनी समितियों को अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी बनाएं।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल संचालन में बैंक स्थापना अधिकारी श्री कमलेश अहिरवार एवं प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षक श्री बाबूलाल कुशवाहा का विशेष योगदान रहा।

जैविक उत्पादों के लिए बहु-राज्यीय सहकारी समितियाँ: किसानों को वैश्विक बाजार से जोड़ने की ऐतिहासिक पहल

नई दिल्ली। भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय द्वारा कृषि एवं सहकारी क्षेत्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और दूरदर्शी पहल की गई है। केंद्रीय मंत्रिमंडल के अनुमोदन से राष्ट्रीय स्तर की बहु-राज्यीय सहकारी समितियों—राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL) और राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (NCOL)—की स्थापना की गई है। इन संस्थाओं का उद्देश्य क्रमशः कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देना तथा जैविक उत्पादों के उत्पादन, प्रमाणन और विपणन को मजबूत करना है।यह पहल भारत की सहकारिता आधारित कृषि व्यवस्था को एक नए आयाम तक ले जाने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकती है, विशेष रूप से तब, जब देश के अधिकांश किसान छोटे और सीमांत वर्ग से आते हैं।

भारत में कृषि क्षेत्र लंबे समय से कई संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करता रहा है, जिनमें बाजार तक सीमित पहुंच, उचित मूल्य का अभाव, भंडारण और प्रसंस्करण की कमी, तथा निर्यात प्रक्रियाओं की जटिलता शामिल हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सहकारिता मॉडल को एक प्रभावी विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

बहु-राज्यीय सहकारी समितियाँ किसानों, विशेषकर FPOs (Farmer Producer Organizations) और PACS (Primary Agricultural Credit Societies) को एक साझा मंच प्रदान करती हैं, जहाँ वे सामूहिक रूप से अपने उत्पादों का प्रबंधन, विपणन और निर्यात कर सकते हैं। इससे उनकी सौदेबाजी की शक्ति बढ़ती है और उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL) को एक "अंब्रेला संगठन" के रूप में विकसित किया गया है, जो सहकारी समितियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देगा। NCEL का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है, जिसमें उत्पादों का संग्रह, भंडारण, प्रसंस्करण, ब्रांडिंग, पैकेजिंग, प्रमाणन, अनुसंधान एवं विकास तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार में विपणन शामिल हैं।

NCEL के माध्यम से किसानों को सीधे वैश्विक बाजार से जुड़ने का अवसर मिलेगा, जिससे उन्हें मध्यस्थों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य मिल सकेगा। मसाले, दालें, चावल, फल-सब्जियाँ और डेयरी उत्पाद जैसे कई कृषि उत्पाद निर्यात की दृष्टि से अत्यधिक संभावनाशील हैं।

राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (NCOL) विशेष रूप से जैविक उत्पादों के संवर्धन के लिए स्थापित की गई है। यह संस्था जैविक उत्पादों के संग्रह, प्रमाणन, गुणवत्ता परीक्षण, ब्रांडिंग और विपणन की संपूर्ण प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप से संचालित करेगी।

वर्तमान समय में जैविक उत्पादों की मांग देश और विदेश दोनों ही बाजारों में तेजी से बढ़ रही है।

महिला स्वास्थ्य एवं मनोविज्ञान पर कार्यशाला संपन्न, अधिकारियों को मिला व्यवहारिक मार्गदर्शन

भोपाल। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ मर्यादित, भोपाल द्वारा सहकारिता विभाग की महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए "महिला स्वास्थ्य एवं मनोविज्ञान" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यशाला का उद्देश्य महिला कर्मचारियों के समग्र विकास, स्वास्थ्य जागरूकता एवं कार्यस्थल पर उनके अधिकारों के प्रति सजगता बढ़ाना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसके पश्चात विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा क्रमवार सत्र आयोजित किए गए। प्रत्येक विशेषज्ञ ने अपने विषय को न केवल सैद्धांतिक रूप से प्रस्तुत किया, बल्कि उसे दैनिक जीवन एवं कार्यस्थल की परिस्थितियों से जोड़ते हुए व्यवहारिक समाधान भी सुझाए।

डॉ. जया कोष्टा - तकनीकी दक्षता एवं कार्यकुशलता पर जोर

डॉ. जया कोष्टाने अपने सत्र में आधुनिक कार्यालयीन कार्यप्रणाली में तकनीकी दक्षता की आवश्यकता को विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि आज के डिजिटल युग में ई-ऑफिस, ऑनलाइन फाइल प्रबंधन, डेटा सुरक्षा एवं डिजिटल संचार माध्यमों का प्रभावी उपयोग कार्यकुशलता को कई गुना बढ़ा सकता है।उन्होंने प्रतिभागियों को समय प्रबंधन (Time Management) के महत्व को समझाते हुए प्राथमिकताओं के निर्धारण, कार्यों के वर्गीकरण एवं अनावश्यक तनाव से बचने के उपाय बताए। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि तकनीक का सही उपयोग महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वासी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एडवोकेट भावना त्रिपाठी - महिला अधिकार एवं विधिक संरक्षण

एडवोकेट भावना त्रिपाठी ने महिला अधिकारों एवं कार्यस्थल पर सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (POSH Act) से संबंधित नियमों, शिकायत निवारण तंत्र (ICC) की भूमिका एवं शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया को सरल भाषा में समझाया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्येक महिला को अपने अधिकारों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है, जिससे वे किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध आत्मविश्वास के साथ आवाज उठा सकें। उन्होंने उदाहरणों के माध्यम से बताया कि कानूनी जागरूकता ही सुरक्षा की पहली सीढ़ी है।

श्रीमती रश्मि सिंघई (जैन) - महिला स्वास्थ्य एवं वेलनेस

श्रीमती रश्मि सिंघई (जैन) ने अपने सत्र में महिला स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की। उन्होंने बताया कि व्यस्त जीवनशैली के कारण महिलाएं अक्सर अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा कर देती हैं, जो दीर्घकाल में गंभीर समस्याओं का कारण बन सकता है।

उन्होंने संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, योग, पर्याप्त नींद एवं मानसिक शांति के महत्व पर बल दिया। साथ ही, उन्होंने हार्मोनल संतुलन, आयरन एवं कैल्शियम की आवश्यकता तथा नियमित स्वास्थ्य जांच (Health Check-up) को महिलाओं के लिए अनिवार्य बताया।

उन्होंने प्रतिभागियों को "Self-care is not selfish" का संदेश देते हुए स्वयं की देखभाल को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. मनोज कुमार जैन - मनोवैज्ञानिक संतुलन एवं वर्क-लाइफ बैलेंस

डॉ. मनोज कुमार जैन ने अपने व्याख्यान में मानसिक स्वास्थ्य एवं वर्क-लाइफ बैलेंस पर विशेष जोर दिया। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में कार्य का दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारियां एवं सामाजिक अपेक्षाएं महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। उन्होंने तनाव प्रबंधन (Stress Management) के लिए ध्यान (Meditation), सकारात्मक सोच (Positive Thinking), भावनात्मक अभिव्यक्ति (Emotional Expression) एवं समय-समय पर विश्राम (Breaks) लेने की सलाह दी।डॉ. जैन ने यह भी कहा कि मानसिक रूप से सशक्त महिला ही अपने परिवार एवं कार्यस्थल दोनों में संतुलन स्थापित कर सकती है। उन्होंने प्रतिभागियों को आत्म-संवाद (Self-talk) एवं आत्म-स्वीकृति (Self-acceptance) की प्रक्रिया अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के सत्र समन्वयक के रूप में श्रीमती रेखा पिप्पल एवं कार्यक्रम का संचालन श्री संतोष येड़े द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रतिभागियों से प्राप्त फीडबैक में कार्यशाला को अत्यंत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक बताया गया। प्रतिभागियों ने इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के नियमित आयोजन की आवश्यकता व्यक्त करते हुए इसे महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सराहनीय पहल बताया।

नाबार्ड प्रायोजित सॉफ्टकॉब योजना अंतर्गत

बी-पैक्स कार्मिकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण

भोपाल। सहकारी संस्थाओं के डिजिटलीकरण एवं कार्यप्रणाली को अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में नाबार्ड प्रायोजितसॉफ्टकॉब योजनाके अंतर्गत बी-पैक्स (प्राथमिक कृषि साख समितियाँ) के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ मर्यादित, भोपाल द्वारा जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित, रीवा में सफलतापूर्वक किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारियों, सहायक प्रबंधकों, नोडल अधिकारियों, ERP मास्टर ट्रेनरों, अकाउंटेंट्स एवं जिले की विभिन्न सहकारी समितियों के संस्था प्रबंधकों की सक्रिय सहभागिता रही। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य बी-पैक्स स्तर पर कार्यरत कार्मिकों को सॉफ्टकॉब योजना के अंतर्गत लागू डिजिटल सिस्टम एवं ERP आधारित कार्यप्रणाली के प्रति दक्ष बनाना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत उद्बोधन के साथ हुआ, जिसमें सहकारिता क्षेत्र में तकनीकी उन्नयन के महत्व पर प्रकाश डाला गया। आयोजकों ने बताया कि सहकारी संस्थाओं में ERP आधारित प्रणाली लागू कर कार्यों में पारदर्शिता, गति एवं जवाबदेही सुनिश्चित की जा रही है, जिससे किसानों को बेहतर एवं समयबद्ध सेवाएं प्रदान की जा सकें।

प्रशिक्षण के दौरान विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न तकनीकी एवं प्रबंधन विषयों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इसमें विशेष रूप से ERP सॉफ्टवेयर का संचालन, डेटा एंट्री एवं प्रबंधन, ऑनलाइन ट्रांजेक्शन, लेखा संधारण, ऑडिट प्रक्रिया एवं रिपोर्टिंग प्रणाली जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल रहे। वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं डिजिटल युग में सहकारी संस्थाओं के लिए ERP प्रणाली को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। इससे न केवल कार्यों में पारदर्शिता आती है, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया भी अधिक सटीक एवं त्वरित हो जाती है। उन्होंने यह भी बताया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ सीधे किसानों तक पहुँचाना अधिक सुगम हो जाता है।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी बताते हुए कहा कि इससे उनके कार्य निष्पादन में दक्षता बढ़ेगी तथा संस्थाओं के संचालन में आने वाली समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा। उन्होंने भविष्य में भी इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के नियमित आयोजन की अपेक्षा व्यक्त की।अंत में आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों से प्राप्त ज्ञान का अपने-अपने संस्थानों में प्रभावी उपयोग करने का आह्वान किया, ताकि सहकारी क्षेत्र को और अधिक मजबूत एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

म.प्र. राज्य सहकारी संघ मर्यादित भोपाल की ओर से प्रकाशक, मुद्रक गणेश प्रसाद मांझी द्वारा मध्यप्रदेश राज्य सहकारी मुद्रणालय परिमित, भोपाल से मुद्रित एवं ई-8/77, शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। प्रबंध सम्पादक : ऋतुराज रंजन, संपादक : गणेश प्रसाद मांझी
डॉक पंजीयन क्रमांक : म.प्र./भोपाल/357/2021-23 मुद्रित पत्र रजि. नं./आर.एन./13063/1967, फोन : 2926159, 2926160, इस अंक में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिनमें संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।